

## विचार बिन्दु

जब जिन्दगी को अपने दिल के गीत सुनाने का मौका नहीं मिलता, तब वह अपने मन के विचार सुनाने के लिए दार्शनिक पैदा कर देती है।  
—खलील जिब्रान

## आयुर्वेद के रसायन

## मानवता के लिये वरदान हैं

आज की चर्चा एक बार पुनः आयुर्वेद के रसायनों पर है। जैसा कि पहले चर्चा की जा चुकी है, जीवन में एक ऐसा समय आता है जब कितना ही बुद्धिमान डॉक्टर हो या कितनी ही बढ़िया चिकित्सा हो, रोग ठीक करना मुश्किल हो जाता है। यदि व्यक्ति का बल और मांस क्षीण हो जाये तो ऐसा भान होने लगता है जैसे आयु पूरी हो चुकी है। कोई महाव्याधि अचानक निवर्तित हो जाये व भोजन से मिलने वाले लाभ मिलना भी बंद हो जायें तो भी यही स्थिति बनती है (देखें, सु.सू.32.7-8)। चिकित्सकमानः सम्यक् च विकारो योऽभिवर्धते प्रक्षीणबलमांसस्य लक्षणं तदलायुषः॥ निवर्तते महाव्याधिः सहसा यस्य देहिनः। न चाहारफलं यस्य दृश्यते स विनश्यति॥ जानी-मानी व बहुत लोगों पर सफल और बढ़िया तैयार औषधि भी यदि किसी व्यक्ति में वांछित प्रभाव ना दे पा रही हो तो व्यक्ति को गैर-उपचार योग्य श्रेणी में माना जाता है। चिकित्सक की सलाह से तैयार कर दिये गये भोजन का वांछित परिणाम नहीं मिल रहा हो, तो चिंताजनक स्थिति मानी जाती है (देखें, च.इ.12.7-8)। विज्ञानतः बहुशः सिद्धं विधिवच्चचारितम्। न सिध्यत्योषधं यस्य नास्ति तस्य चिकित्साम्॥ आहारमुपयुञ्जानो भिषजा सुपकल्पितम्। यः फलं तस्य नाप्नोति दुर्लभं तस्य जीवितम्॥ बात यहाँ अति-कठिन परिस्थिति की है।

वस्तुतः आयुर्वेद के दृष्टिकोण से माना जाता है कि जब मृत्यु का समय निकट आता है तो कुछ अरिष्ट प्रकट होते हैं (देखें, च.इ.2.5)। न त्वरिष्टस्य जातस्य नाशोऽस्ति मरणदृते। मरणं चापि तत्रास्ति यत्रारिष्टपुरःसरम्॥ किन्तु माना यह भी जाता है कि अरिष्ट को निर्विवाद रूप से पहचानने में त्रुटि भी हो सकती है (देखें, च.इ.2.6)। मिथ्यादुष्टमरिष्टाभमनरिष्टमजानताः। अरिष्टं वाऽप्यसम्बद्धमेतत् प्रज्ञापराधजम्॥ कहने का तात्पर्य यह है कि हो सकता है वास्तव में अरिष्ट प्रकट ना हुआ हो, फिर भी त्रुटिवश प्रकट हुआ मान लिया जाये।

अतः यदि भ्रम की स्थिति हो तो चिकित्सा की जाये या नहीं? यदि हाँ, तो कैसी चिकित्सा उपयुक्त हो सकती है? मेरे विचार से अरिष्ट की सही या गलत पहचान के पचड़े से बाहर निकल कर चिकित्सा करना ही उचित है। ऐसे अनेक लोग हैं जिन्हें अंतिम स्थिति में पहुँचा हुआ मानकर धरती पर लिटाकर तुलसी और गंगाजल खिला-पिला दिया गया। गाय की बछिया की पूँछ पकड़ा कर दान-पुण्य भी करा दिया गया। पर वे फिर उठ खड़े हुये और कई साल चले। इसलिये जब तक प्राण हैं, चिकित्सा करना उपयोगी है।

अब प्रश्न यह है कि ऐसी कौन सी चिकित्सा है जो अरिष्ट निवारण में सक्षम हो सकती है? वैसे तो अरिष्ट-निवारण की सामर्थ्य कम ही व्यक्तियों में होती है, तथापि यह असंभव नहीं है। अरिष्ट प्रकट होने के बाद भी युक्ति-व्याप्राय, सत्त्वावजय और दैव-व्याप्राय की त्रिवेणी में की गयी चिकित्सा मृत्यु को टाल सकती है। इसका संकेत वैज्ञानिक-महर्षि आचार्य सुश्रुत ने दिया है। रिष्ट उत्पन्न होने पर मृत्यु निश्चित है, तथापि मानस दोषों से मुक्त विद्वान के द्वारा या रसायन, तप, और जप में पारंगत व्यक्ति द्वारा मृत्यु का निवारण किया जा सकता है (देखें, सु.सू.28.5)। ध्रुवन्तु मरणं रिष्टे ब्राह्मणैस्तत् किलामलैः। रसायनतपोज्यत्तत्परैर्वा निर्वार्यते॥ कठिन रोगों की स्थिति में भी बचने की संभावना यहाँ साफ दृष्टिगोचर है।

क्या वास्तव में रसायन इतने उपयोगी और प्रभावी हैं? संहिताओं, शोध और अनुभव तीनों में ही इस प्रश्न का उत्तर धनात्मक ही मिलता है। आइये पहले संहिताओं के वे प्रमाण देखते हैं जो केवल कठिन रोगों व परिस्थितियों के सन्दर्भ में हैं। पहला प्रमाण आचार्य सुश्रुत के उस कथन से मिलता है जिसमें रोगों की सूची देते हुये संकेत किया गया है कि ये रोग रसायन के बिना असाध्य हो जाते हैं (देखें, सु.सू.33.3)। ये जुष्टा व्याधयो यान्त्यव्यायताम्। रसायनादिना वत्स तान् शुष्णकमना मम। इस संदर्भ से यह संकेत तो स्पष्ट है ही कि रसायन से रोगों को उन अवस्थाओं में जाने से रोका जा सकता है जहाँ वे चिकित्सा की दृष्टि से असाध्य हो जाते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि रसायन असाध्य रोगों को भी साध्य बनाते हुये चिकित्सा में मददगार हो सकते हैं। उदाहरण के लिये, हलाँकी कुष्ठ और प्रमेह असाध्य होते हैं, पर आचार्य सुश्रुत ने स्वयं एक ऐसा यौग दिया है जो असाध्य कुष्ठ और प्रमेह को भी ठीक कर देता है (सु.चि. 10.12)। एषौषधायस्फुटिरसाध्यं कुष्ठं प्रमेहं वा साध्ययति। वस्तुतः यह उस सिद्धान्त की विजय है जिसमें आचार्य चरक ने चिकित्सा की सफलता में युक्ति को सर्वोपरि माना है। यहाँ निहितार्थ यह है कि

आयुर्वेद के रसायन बढ़ती उम्र के लोगों में डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म की गति को बढ़ा सकते हैं? इस विषय में कई अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि रसायन औषधियाँ डी.एन.ए. रिपेयर की गति को बढ़ाकर बुढ़ापा आने की गति को धीमा कर देती हैं। हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए.स्ट्रैंड में टोडफोड की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती है। यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया है।

चरक द्वारा सोसायटल कोलेस या जनपदोर्ध्वश की स्थिति-बवा, पानी, मिट्टी और ऋतुओं के प्रदूषित हो जाने से उत्पन्न महामारियों-पंचकर्म व रसायनों के द्वारा समस्या निवारण हेतु सुझाया गया रास्ता है (देखें, च.वि.3.13-14)। येषां न मृत्युसामान्यं सामान्यं न च कर्मणाम्। कर्म पञ्चिवधं तेषां भेषजं परमुच्यते॥ रसायनानां विधिवच्चोपयोगः शस्यते। शस्यते देहवृत्तिश्च भेषजैः पूर्वमुच्यते॥ रसायन द्रव्यों के साथ ही अद्रव्य रसायन भी हैं जो सत्त्वावजय और दैव-व्याप्राय चिकित्सा में मददगार हैं। उदाहरण के लिये दान, विनम्रता, दया, सत्य, ब्रह्मचर्य, कृतज्ञता, मित्रता, रसायन व अच्छे कार्य सब उन्नवर्धक हैं (अ.ह.शा.3.120)। दानशीलदयासत्य ब्रह्मचर्यकृतज्ञताः। रसायनानि वैश्वी च पुण्यायुर्वृद्धिकृद्गणः॥

संहिताओं के साथ ही आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों से भी रसायनों की क्रियात्मकता के टोस प्रमाण मिल रहे हैं। मेरे ज्ञान में रसायन योगों पर 2100 शोधपत्र और एकल रसायनों पर कम से कम 5000 शोधपत्रों में से एक भी ऐसा नहीं है जिसमें रसायनों की त्रिदोष-नियामकता पर टोस प्रश्नचिन्ह लगाया हो। आइये कुछ उदाहरण देखते हैं।

उम्र-आधारित रोगजनन का एक प्रमुख कारण डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म में गड़बड़ी होना माना जाता है। जीवित कोशिकाओं के गुणसूत्रों में पाये जाने वाले तंतुनुमा अणु को डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड या डी.एन.ए. कहा जाता है। इसी में अनुवांशिक कोड निहित रहता है। जैसे जैसे डी.एन.ए. डैमेज का बोझ बढ़ता जाता है, शरीर बुढ़ापे की ओर बढ़ता जाता है। इस कारण अनेक समस्याएँ जैसे कैंसर, न्यूरोडीजेनरेशन और बढ़ती उम्र के कारण होने वाली अनेक व्याधियाँ विकसित हो जाती हैं। शरीर की कोशिकाओं द्वारा डी.एन.ए. डैमेज के संकेत प्राप्त करना और टूट-फूट की मरम्मत करने की क्षमता उम्र के साथ घटती जाती है। इसलिये बढ़ती उम्र में अनेक रोग लग जाते हैं।

तो क्या आयुर्वेद के रसायन बढ़ती उम्र के लोगों में डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म की गति को बढ़ा सकते हैं? इस विषय में कई अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि रसायन औषधियाँ डी.एन.ए. रिपेयर की गति को बढ़ाकर बुढ़ापा आने की गति को धीमा कर देती हैं। हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए.स्ट्रैंड में टोडफोड की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती है। यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया है। एक अन्य अध्ययन में, जो 45-60 वर्ष के लोगों के मध्य किया गया, पाया गया है कि आमलकी रसायन का प्रयोग रक्त की परिफेरल ब्लड मोनोन्यूक्लियर सेल्स में टोलोमीयर की लम्बाई में बदलाव किये बिना टोलोमेरेज क्रियात्मकता को बढ़ा देता है। इससे चूँकि टोलोमियर के क्षरण में कमी आती है, अतः हैथ्यरसायन में बेहतर होती है। एक तीसरा उदाहरण अश्वगंधा का दिया जा सकता है। कुल 50 स्वस्थ खिलाडियों की मध्य किये गये क्लीनिकल ट्रायल में यह पाया गया है कि अश्वगंधा की जड़ों का एक्सट्रैक्टकार्डियोरैस्पारेटर सहनशीलता को बढ़ा देता है। इसके अलावा अनेक इनवाइटो, इन वाईवो और क्लिनिकल अध्ययन में अश्वगंधा और आमलकी सहित तमाम रसायनों द्वारा कैंसर, मधुमेह, कार्डियोवैस्कुलर बीमारियाँ, मानसिक बीमारियाँ तथा अपर-रैस्पारेटर-ट्रैक्टसंक्रमण से बचाव होता है। एक प्रमाण-आधारित तथ्य यह भी है कि आयुर्वेद के रसायनों से बेहतर एंटी-एंजाइमेटिक और इनफ्लेमेशन का बहना भी है। रसायन द्रव्यों के उपयोग करते रहने से शरीर का व्याधिप्रसन्न और है तथा ऑक्सिडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन में कमी होती है।

उत्तम बात यह है कि कुछ ऐसे द्रव्य हैं जो आहार, रसायन और औषधि, तीनों ही प्रकारों में वर्गीकृत हैं। फल व सूखे मेवे, खजूर, द्राक्षा, मुनक्का, बादाम, तिल, आवला, लहसुन, सेंड, कालीमिर्च, पिपली, हल्दी, केंसर, जीरा, धनिया, मूंग, जल, दूध, घी, तुलसी, शहद, गुड़, त्रिकटु एवं त्रिफला आदि ऐसे द्रव्य हैं जिनके युक्तिपूर्वक सेवन के लिये किसी क्लिनिकल ट्रायल का इंतजार करने की आवश्यकता नहीं है। संहिता, साईंस और अनुभव सब इन द्रव्यों के पक्ष में हैं।

मृत्यु की तिथि तय नहीं है, अपितु प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा रखती है (च.वि. 3.29)। भूतानामायुर्वृत्तिमपेक्षते। युक्ति से उम्र बढ़ सकती है। असल में युक्तिव्याप्राय आचार्य चरक द्वारा आयुर्वेदाचार्यों पर किये गये विश्वास की पराकाष्ठा है। चिकित्सा में सफलता युक्ति पर निर्भर है (च.सू. 2.16)। सिद्धयुक्तौ प्रतिष्ठिता। जब सफलता युक्ति पर आश्रित हो तो साध्य-असाध्य या अरिष्ट की जाँच-परख से ज्यादा महत्त्व युक्ति के प्रयोग पर दिया जाना चाहिये। और इस युक्ति में रसायन महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। इसलिये मेरा मानना है कि आयुर्वेदाचार्यों की देखरेख में लिये जाने वाले रसायन मौत के मुँह से निकाल लाने की क्षमता रखते हैं। रसायनों की क्षमताओं को पहचानिये। रसायन जरा-व्याधि का नाश तो करते ही हैं, जीवन का नाश भी रोक सकते हैं।

—अतिथि सम्पादक,

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,

(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंगप्रोफेसर)

(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

# मौसम की मार से प्याज-टमाटर सहित कई सब्जियों के भाव बढ़े

प्याज-टमाटर ही नहीं आलू भी कर रहा आम आदमी की जेब ढीली

अजमेर, (कास)। प्रदेश में मानसून का आगमन हो चुका है, ऐसे में प्याज-टमाटर समेत कई सब्जियों के भाव आसमान छू रहे हैं। मंडी से लेकर खुदरा बाजार तक के दाम में बड़ा अंतर देखने को मिल रहा है। इस महंगाई की रस में आलू भी पीछे नहीं है। आलू का दाम 32 से 35 पड़ चुका है। बारिश के कारण किसानों की फसल प्रभावित हुई है। सब्जियों के दामों में भारी उछाल के चलते आम जनता के लिए बड़ी चिंता का विषय बन गई है। प्याज-टमाटर ही नहीं अब आलू भी आम आदमी की जेब ढीली कर रहा है, सब्जियों के भाव बढ़ने से अब वे आम आदमी की थाली से हरी सब्जियाँ दूर होती जा रही हैं।

टमाटर के साथ आलू की कीमतें चर्चा में—मानसून के साथ ही प्याज-टमाटर सहित सब्जियों के भाव आसमान छू रहे हैं। इस बार टमाटर की कीमतें सबसे ज्यादा चर्चा में हैं। बाजार में टमाटर का भाव 80 रुपए तो वहीं प्याज की 50 रुपए प्रति किलो मिल रही है, इसके साथ ही आलू जो हर परिवार की थाली का मुख्य हिस्सा होता है, आलू के दाम 40 रुपए प्रति किलो पहुँचने के साथ ही सब्जियों के दाम में बढ़ोत्तरी से महिलाओं की रसोई का बजट बिगड़ गया है। आम आदमी



मौसम की मार से सब्जियों के दामों बढ़ोत्तरी होने लगी है।

के लिए 40 रुपए प्रति किलो कीमत पर आलू खरीदना भी मुश्किल हो गया है। वहीं हरी सब्जियों के दामों में भी भारी बढ़ोत्तरी देखी जा रही है, गंवार फली 160 रुपए प्रति किलो और भिंडी 50 रुपए प्रति किलो, बैंगन 80 रुपए, फूल गोभी 80 रुपए, टिंडे 100 रुपए,

तुरई 80 रुपए पड़ चुका है।

दाम बढ़ते से घरेलू बजट पर असर—सब्जी की कीमतों में बढ़ोत्तरी से आम उपभोक्ता के बजट से बाहर होने से घरेलू बजट बिगड़ रहा है। किसानों और व्यापारियों का कहना है कि मानसून के कारण सब्जियों की

फसल को नुकसान पहुँचा है जिससे उनकी आपूर्ति में कमी आई है। इसके साथ ही परिवहन और भंडारण की लागत भी बढ़ गई है जो कीमतों में वृद्धि का एक अन्य कारण है। इस महंगाई के चलते आम आदमी की परेशानी बढ़ गई है। महिलाओं को घर के बजट में

- हरी सब्जियाँ आम आदमी की थाली से दूर होती जा रही हैं
- सब्जियों के दाम में बढ़ोत्तरी से महिलाओं की रसोई का बजट बिगड़ा

संतुलन बनाना मुश्किल हो रहा है।

मौसम की मार—पानी लगाने की वजह से प्याज अब दागी हो रहा है, जिससे किसानों को टालियाँ तक यूँ ही फेंकनी पड़ रही है। दूसरी ओर आलू की बात करें तो अब की बार पैदावार कम हुई है जिसके चलते दाम बढ़ रहे हैं। दूसरी ओर मंडी में की जाने वाली खरीद और खुदरा बाजार के दाम में भी अंतर होने के कारण आवजन काफी प्रभावित है। दरअसल, बदले हुए मौसम की वजह से सिर्फ टमाटर, आलू प्याज ही महंगा नहीं बिक रहा है, अन्य सब्जियों की कीमत भी आसमान छूने लगी है। ऐसे में मंडी में खरीद के लिए पहुँचने वाले लोग दाम पूछने के बाद खरीद से पीछे हट रहे हैं, क्योंकि व्यवस्था के स्तर पर खरीद बजट से बाहर हो रही है।

## शिक्षा का मानवता, देश और समाज के कल्याण के लिए अधिकाधिक उपयोग हो : राज्यपाल

कोटा, (निसं)। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा का 13वाँ दीक्षांत समारोह आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने की तथा सम्मानित अतिथि के रूप में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के सभापति प्रोफेसर टीजी सौताराम उपस्थित थे।

इस अवसर पर राज्यपाल मिश्र ने संविधान के मूल कर्तव्यों का वाचन कर समारोह की शुरुआत की एवं उन्होंने 127 विद्यार्थियों को डिग्रीयों एवं 44 स्वर्ण पदक प्रदान किए एवं दीक्षांत समारोह के सफल आयोजन के लिए विश्वविद्यालय और सभी पदक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रदान कीं। कुलसचिव धीरज सोनी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा कि दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं बल्कि नए जीवन का आरम्भ है। यह वह समय है जब आप विश्वविद्यालय में अर्जित ज्ञान का उपयोग राष्ट्र और समाज के उत्थान में करने के लिए सक्षम होते हैं। विद्यार्थियों में संवर्धित प्रबोधकों से आपत्तियाँ हटें, उसका मानवता के कल्याण के



कोटा में राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने उपाधियाँ प्रदान कीं।

लिए, देश और समाज के लिए अधिकाधिक उपयोग किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों में संविधान उद्यान निर्मित करने की संज्ञा यह है कि हम संविधान की उदात्त परम्पराओं से सदा जुड़े रहें। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा अपनी स्थापना के बाद से ही देश में शिक्षा के प्रसार में महती भूमिका निभा रहा है।

तकनीकी शिक्षा मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके लिए हमें विश्वविद्यालयों को इस तरह से तैयार करने की जरूरत है कि वहाँ नित्य नवीन ज्ञान का प्रसार हो ताकि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोग से भारत को फिर से विश्वगुरु बन सके। विगत वर्षों में विश्वविद्यालय

द्वारा युवाओं को देश-विदेश में गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान किए हैं। राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा कि देश की जो नई शिक्षा नीति बनी है, उसका मूल भी यही है कि भारत आत्मनिर्भर हो। इसीलिए शिक्षा नीति में युवाओं को कौशल विकास से जोड़े जाने पर विशेष

- राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा का 13वाँ दीक्षांत समारोह आयोजित

जोर दिया गया है। विश्वविद्यालयों गुणवत्ता और नवाचार पर लगातार ध्यान केंद्रित करना होगा। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य 21वीं सदी की जरूरतों एवं चुनौतियों को ध्यान में रखकर स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को अधिक समग्र बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति में बदलना है।

समारोह में राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा के विभिन्न सम्बद्ध महाविद्यालयों के निदेशक, प्राचार्य, विश्वविद्यालय प्रबन्ध मण्डल एवं विद्या परिषद के सदस्य, अन्य विश्वविद्यालयों के कुलपति, राजभवन से अधिकारियों, विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारियों, विभागाध्यक्ष, कार्यालयाध्यक्ष, कुलसचिव, समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी, संकाय सदस्य, शिक्षक, शिक्षाविद्, विद्यार्थी व उनके अभिभावक, प्रासासनिक अधिकारी, गणमान्य नागरिक एवं आमंत्रित विशिष्ट अतिथिगणों ने शिरकत की।

## सरकारी स्कूलों में लगे प्रबोधक का होगा प्रमोशन

बीकानेर, (निसं)। प्रारंभिक शिक्षा के अधीन कार्यरत 2449 प्रबोधकों को जल्दी ही करिष्ठ प्रबोधकों पर पदोन्नत करने की तैयारी शिक्षा विभाग ने कर ली है। प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय ने सभी जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक शिक्षा, मुख्यालय) को उनके जिले में

पदोन्नति के पात्र प्रबोधकों की संख्या भेजते हुए उनकी अस्थायी वरिष्ठता सूची 10 जुलाई तक अद्यतन करने के निर्देश दिए हैं।

इस अस्थायी सूची पर 3 दिवस में संवर्धित प्रबोधकों से आपत्तियाँ मांगने के बाद 15 जुलाई तक स्थायी वरीयता सूची जारी कर दी जाएगी।

20 जुलाई तक चयन संबंधी कार्यवाही पूरी कर चयन आदेश की हाई और सॉफ्ट कॉपी 22 जुलाई तक प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय को वाहक स्तर पर भेजने के निर्देश दिए गए हैं।

पूरे राज्य में कुल 10392 प्रबोधक वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर

पदोन्नति के पात्र हैं, जिसमें से वर्ष 2021 में पदोन्नत करने के लिए 5 हजार पद स्वीकृत किए गए थे। शेष रहे 5392 में से अब 2449 पदों पर पदोन्नति की स्वीकृति सरकार ने दी है। जिन नवगठित जिलों में जिला स्थापना समिति का गठन नहीं हुआ है, उन जिलों में पूर्व 33 जिलों के

अनुसार ही वरिष्ठता निर्धारित की जाएगी। जिले में कुल 254 प्रबोधक पदोन्नति के पात्र थे, जिसमें से 122 को वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नत किया जा चुका है। शेष 132 प्रबोधकों में से 60 प्रबोधकों को वरिष्ठता के आधार इस बार पदोन्नत किया जाएगा।

### राशिफल रविवार 7 जुलाई, 2024



पंडित अनिल शर्मा

आषाढ मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2081, पुष्य नक्षत्र सोमवार प्रातः 6:03 तक, हजरत योग रात्रि 2:12 तक, बालव करण सांय 4:43 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।  
ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरु-वृष, शुक-कर्क, पंडित अनिल शर्मा

आषाढ मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2081, पुष्य नक्षत्र सोमवार प्रातः 6:03 तक, हजरत योग रात्रि 2:12 तक, बालव करण सांय 4:43 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।  
ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरु-वृष, शुक-कर्क, पंडित अनिल शर्मा

आषाढ मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2081, पुष्य नक्षत्र सोमवार प्रातः 6:03 तक, हजरत योग रात्रि 2:12 तक, बालव करण सांय 4:43 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।  
ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरु-वृष, शुक-कर्क, पंडित अनिल शर्मा

**मेष**  
घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

**वृष**  
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

**मिथुन**  
आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

**कर्क**  
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

**सिंह**  
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

**कन्या**  
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित खोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

**तुला**  
आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

**वृश्चिक**  
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

**धनु**  
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

**मकर**  
परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। घर-परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

**कुंभ**  
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित बातें सफल होंगी।

**मीन**  
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित बातें सफल होंगी।